NCERT Solutions for Class 12 History Chapter 1 ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ

अभ्यास-प्रश्न

उत्तर दीजिए (लगभग 100-150 शब्दों में)

प्रश्न 1. हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को उपलब्ध भोजन सामग्री की सूची बनाइए। इन वस्तुओं को उपलब्ध कराने वाले समूहों की पहचान कीजिए

उत्तरः शहरों में रहने वाले हड़प्पा सभ्यता के लोगों की भोजन सामग्रियाँ हैं

1. पेड़-पौधों के उत्पाद,
2. अंडे, मांस और मछली,
3. विभिन्न प्रकार के अनाज; जैसे-गेहूँ, जौ, चावल, सफ़ेद चना, दालें और तिलहन आदि
4. दूध, दही, घी एवं संभवत: शहद । पुरातत्वविदों ने हड़प्पा प्राप्त जले हुए अनाज के से दानों, बीजों और हड्डियों आदि की सहायता से वहाँ के लोगों की खान-पान की आदतों का पता लगाया है।

हड़प्पा के लोग अधिक मात्रा में पेड़-पौधों के उत्पादों और जानवरों से प्राप्त उत्पादों का सेवन करते थे तथा भेड़-बकरी, गाय, भैंस आदि को दूध के लिए पालते थे तथा मछली, हिरन, सांभर बारहसिंगा और सूअर को मांस के लिए पालते थे। पूर्व और प्रौढ़ हड़प्पाई लोगों द्वारा इसी भोजन का उपयोग किया जाता था। गुजरात के लोग दुधारू पशुओं को ज्यादातर पालते थे। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा आदि की खुदाई से कछुओं की भी हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं। सेलखड़ी की बनी नींबू की पत्ती से स्पष्ट है कि लोग नींबू, खजूर, अनार और नारियल जैसे फलों की भी जानकारी रखते थे। बड़े-बड़े घरों में अन्न के भंडार थे। अनाज के संरक्षण से पता चलता है कि हड़प्पा में अन्न का आगमन और निर्गमन

शासन द्वारा नियंत्रित रहा होगा। यही नहीं, अनाज विनिमय का एक सबसे महत्त्वपूर्ण साधन रहा होगा।

प्रश्न 2. पुरातत्वविद हड़प्पाई समाज में सामाजिक-आर्थिक भिन्नताओं का पता किस प्रकार लगाते हैं? वे कौन-सी भिन्नताओं पर ध्यान देते हैं?

उत्तरः प्राप्त अवशेषों से यह अनुमान लगाया जाता है कि समाज में कई वर्ग थे। सामान्य वर्ग में कुम्भकार, बढ़ई, सुनार, शिल्पकार, लुहार, जुलाहे, राजगीर, श्रमिक, किसान आदि लोग रहे होंगे एवं विशिष्ट वर्ग में राजकर्मचारी, सेनाधिकारी आदि रहे होंगे। पुरोहितों का भी एक पृथक् वर्ग रहा होगा, विशिष्ट वर्ग के लोग बस्ती के दुर्ग भाग में तथा साधारण वर्ग के लोग निचले शहर में निवास करते थे। इन्हें हम निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं

1. अनेक स्थलों पर बड़े मकान तथा राजप्रासाद जैसे भवन मिले हैं वहीं दूसरी ओर एक तथा दो कमरों वाले मकान आर्थिक तथा सामाजिक भिन्नता को दर्शाते हैं।
2. खुदाई में अनेक स्थानों पर स्वर्ण, रजत, लाजवर्द तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के आभूषण प्राप्त होते हैं। मिट्टी तथा हाथी दाँत के आभूषण भी मिलते हैं।
3. शवाधानों में मृतकों को दफनाते समय उनके साथ विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ रखी जाती थीं। यह वस्तुएँ बहुमूल्य भी थी और साधारण भी। बहुमूल्य वस्तुएँ मृतक की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति को व्यक्त करती हैं, जबकि साधारण वस्तुएँ उसकी साधारण आर्थिक स्थिति की प्रतीक हैं। शवों को दफनाने वाले गर्तों की बनावट में भी अन्तर था।
4. हड़प्पाई वस्त्रों में भी सामाजिक भिन्नता दिखाई देती है। जहाँ धनी लोग रेशम तथा मखमल के वस्त्रों का प्रयोग करते थे वहीं निम्न आर्थिक स्थिति वाले लोग सूती तथा ऊनी वस्त्रों प्रयोग करते थे। इस प्रकार

पुरातत्वविदों को उत्खनन में अनेक ऐसी वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जिनके आधार पर हमें हड़प्पाई समाज में सामाजिक तथा आर्थिक भिन्नता का पता चलता है।

प्रश्न 3. क्या आप इस तथ्य से सहमत हैं कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल-निकास प्रणाली, नगरयोजना की ओर संकेत करती है? अपने उत्तर के कारण बताइए।

अथवा हड़प्पा सभ्यता की जल निकासी प्रणाली नगर-नियोजन की ओर संकेत करती है।" इस कथन की उदाहरण सहित पुष्टि कीजिए।

उत्तरः हड़प्पाई नगरों को स्थापना वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ढंग से की गई थी। हम इस कथन से पूर्णरूप से सहमत हैं कि हड़प्पा सभ्यता के नगरों की जल निकास प्रणाली नगर-योजना की ओर संकेत करती है। अपने उत्तर की पुष्टि में हम निम्नलिखित कारण प्रस्तुत कर सकते हैं

1. प्रत्येक घर में पकी ईंटों से बनी छोटी नालियाँ होती थीं जो स्नानघरों तथा शौचालयों से जुड़ी होती थीं। इनके द्वारा घर का | गंदा पानी पास की गली में बनी हुई मध्य आकार की निकास नालियों तक पहुँच जाता था।

2. मध्य आकार वाली नालियाँ बड़ी सड़कों के साथ-साथ बने हुए नालों में मिलती थीं। सामान्यतया नालियाँ लगभग 9 इंच चौड़ी और एक फुट गहरी होती थीं, किंतु कुछ इससे दुगुनी बड़ी होती थीं।

3. नालियाँ पकी ईंटों से बनी तथा ढकी होती थीं। उनमें थोड़ी-थोड़ी दूरी पर हटाने वाले पत्थर लगे होते थे ताकि आवश्यकतानुसार उन्हें हटाकर नालियों की सफाई की जा सके।

4. ऐसा लगता है कि पहले नालियों के साथ गलियों का निर्माण किया गया था और फिर उनके अगल-बगल घरों को बनाया गया था, क्योंकि घरों की नालियों को गलियों से जोड़ने के लिए प्रत्येक घर की कम-से-कम एक दीवार का गली के साथ सटा होना आवश्यक था।

5. बड़े नाले ईंटों से अथवा तराशे गए पत्थरों से ढके हुए होते थे। कुछ स्थलों में टोडामेहराबदार नाले भी मिले हैं। उनमें से एक लगभग 6 फुटा गहरा है जो संपूर्ण नगर के गंदे पानी को बाहर ले जाता था।

6. मल-जल निकासी के मुख्य नालों पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर आयताकार हौदियाँ बनी होती थीं। नालियों के मोड़ों पर तिकोनी ईंटों का प्रयोग किया जाता था।

7. घरों का कूड़ा-करकट नालियों में नहीं अपितु घरों के बाहर रखे गए ढके हुए कूड़ेदानों में डाला जाता था।

8. जल निकासी प्रणालियाँ केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं थीं। अनेक छोटी बस्तियों में भी इनके अस्तित्व के प्रमाण | मिले हैं। उदाहरण के लिए लोथल में निवास स्थानों का निर्माण कच्ची ईंटों से किया गया था, किंतु नालियाँ पकी ईंटों से बनाई गई थीं।

प्रश्न 4. हड़प्पा सभ्यता में मनके बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थों की सूची बनाइए। कोई भी एक प्रकार का मनका बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए ।

उत्तरः हड़प्पा सभ्यता में बड़ी संख्या में मनके बनाने का कार्य लोथल तथा चन्हुदड़ो में होता था। सिन्धु नदी के तट पर स्थित चन्हुदड़ो मनके बनाने का मुख्य स्थान था। मनके बनाने में अनेक प्रकार के पत्थर तथा धातुएँ प्रयोग में लायी जाती थीं। सुन्दर लाल रंग का पत्थर 'कार्नीलियन' इसमें प्रमुख था। मनके बनाने में जहाँ जैस्पर, स्फटिक, सेलखड़ी तथा क्वार्ट्स जैसे पत्थर मुख्य थे,

वहीं ताँबा, काँसा तथा सोने जैसी धातुओं का प्रयोग भी किया जाता था। सेलखड़ी एक मुलायम पत्थर था जिस पर कार्य आसानी से हो जाता था। कभी-कभी मनके में चूना-पत्थर का भी प्रयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त शंख, फयॉन्स तथा पकी मिट्टी का प्रयोग भी मनके बनाने में किया जाता था।

मनकों को विभिन्न चरणों में निर्मित किया जाता था। कालियन का लाल रंग प्राप्त करने के लिए पहले पीले रंग के कच्चे माल तथा मनकों को उत्पादन के विभिन्न चरणों में आग पर पकाया जाता था। आग में पकाकर मनकों को न केवल मजबूती मिलती थी अपितु उनमें चमक भी आ जाती थी। मनके बनाने के लिए पत्थर के पिण्डों को सर्वप्रथम अपरिष्कृत आकार में तोड़ा जाता था। इसके पश्चात उसमें से बारीकी से शल्क निकालकर इन्हें अन्तिम रूप दिया जाता था। अन्त में उन पर घिसाई तथा पॉलिश होती थी। इन सबके उपरान्त मनकों को छेदकर पहन लिया जाता था। कुछ मनके सेलखड़ी पाउडर के लेप को साँचे में ढाल कर तैयार किये जाते थे। इस प्रक्रिया से ठोस पत्थरों से बनने वाले ज्यामितीय आकारों के विपरीत कई विविध आकारों के मनके बनाये जा सकते थे।

प्रश्न 5. दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और उसका वर्णन कीजिए। शव किस प्रकार रखा गया है? उसके समीप कौन-सी वस्तुएँ रखी गई हैं? क्या शरीर पर कोई पुरावस्तुएँ हैं? क्या इनसे कंकाल के लिंग का पता चलता है ?

उत्तरः इस शव को देखने से पता चलता है कि शव को उत्तर-दक्षिण दिशा में रखकर दफनाया गया है। शव के साथ कुछ दैनिक उपयोग की वस्तुएँ रखी गई हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि हड़प्पा निवासी मरणोपरांत जीवन में विश्वास करते थे। शव के पास कुछ बर्तन रखे गए हैं। इनमें से एक पानी का जग है और दूसरे ढके हुए बर्तन में संभवतः खाने की सामग्री रखी गई होगी। शव के पास ही एक छोटी-सी तिपाई दिखाई देती है। इसके ऊपर की प्लेट को देखकर लगता है कि इसे खाना परोसने के लिए रखा गया होगा।

मृत शरीर पर कुछ पुरावस्तुएँ भी दिखाई देती हैं। यद्यपि ये स्पष्ट नहीं हैं। लगता है कि मृत चित्र 1.1: एक हडप्पाई शवाधान ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ शरीर को कुछ आभूषण पहनाए गए होंगे। मृत शरीर की पुरावस्तुओं से उसके लिंग का पता लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए हार, कंगन, भुजबंद, अंगूठी आदि स्त्री-पुरुष दोनों धारणा करते थे, किंतु चूड़ियाँ, करधनी, बाली, बुंदे, नथुनी और पाजेब जैसे आभूषणों का प्रयोग केवल महिलाएँ ही करती थीं।

निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए (लगभग 500 शब्दों में)

प्रश्न 6. मोहनजोदड़ो की कुछ विशिष्टताओं का वर्णन कीजिए

उत्तरः मोहनजोदड़ो सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ (विशिष्टताएँ) निम्नलिखित हैं:

(1) एक नियोजित शहरी केन्द्र:

मोहनजोदड़ो एक विस्तृत तथा नियोजित शहर था। यह शहर दो टीलों पर बना था जिनमें एक टीला ऊँचा किन्तु छोटा था जिसे पुरातत्वविद दुर्ग मानते हैं तथा दूसरा टीला निचला किन्तु अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत था जिसे पुरातत्वविद निचला शहर मानते हैं। यह विस्तृत क्षेत्र मुख्य नगर माना जाता है।

(2) सुनियोजित निचला शहर:

मोहनजोदड़ो के निचले भाग में अनेक मकान प्राप्त हुए हैं जो सुनियोजित प्रकार से निर्मित किए गए थे। सुरक्षा की दृष्टि से घरों के दरवाजे सामने सड़क पर न खुलकर पीछे गली में खुलते थे। घरों में सामान्यतः मध्य में एक विस्तृत आँगन हुआ करता था जिसके चारों ओर कमरे होते थे। घरों में ही पीने के पानी के लिए कुएँ होते थे।

(3) सुदृढ़ जल निकास व्यवस्था:

मोहनजोदड़ो की जल निकास व्यवस्था अत्यन्त सुदृढ़ थी। सड़कों के किनारे पक्की ईंटों से बनी तथा ढकी हुई नालियाँ होती थीं ।

(4) विस्तृत सड़क निर्माण :

मोहनजोदड़ो में सड़कों का विस्तृत जाल बिछा हुआ था। सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

(5) विशाल एवं सार्वजनिक स्नानागार:

मोहनजोदड़ो में एक विशाल तथा सार्वजनिक स्नानागार भी प्राप्त हुआ है। यह विशाल स्नानागार आँगन में बना एक आयताकार जलाशय है जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है। इसके तल तक जाने के लिए इसके उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में दो सीढ़ियाँ बनी थीं। इसके तीनों ओर कक्ष बने हुए थे जिनमें से एक में एक बड़ा कुआँ था। जलाशय से पानी एक बड़े नाले में जाता था। इस स्नानागार का प्रयोग किसी विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था।

(6) विशाल अन्नागार:

मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत इसका विशाल अन्नागार है। इसमें आस-पास के स्रोतों से प्राप्त खाद्यान्न भरा जाता था। यह विशाल अन्नागार यह भी दर्शाता है कि मोहनजोदड़ो एक अत्यधिक उपजाऊ भू-क्षेत्र में स्थित था।

(7) सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न शहरी केन्द्र:

मोहनजोदड़ो सांस्कृतिक रूप से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण शहरी केन्द्र था। यहाँ से हमें अनेक प्रकार की मृण्मूर्तियाँ, मृदभाण्ड, सूती कपड़े के अवशेष, पशुओं की अस्थियाँ इत्यादि प्राप्त हुई हैं। आध-शिव, पुजारी की मूर्ति तथा मातृदेवी की अनेक प्रतिमाएँ भी हमें मोहनजोदड़ो से ही प्राप्त हुई हैं। उपर्युक्त बिन्दु स्पष्ट करते हैं कि मोहनजोदड़ो अत्यधिक विशिष्ट नगर था। मोहनजोदड़ो की यह विशिष्टता हमें सुनियोजित नगर निर्माण, किलेबन्दी, अद्भुत जल निकासी,

विस्तृत सड़कों तथा समृद्ध सांस्कृतिक पुरातात्त्विक सामग्री के रूप में दिखाई देती है।

प्रश्न 7. हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाइए और चर्चा कीजिए कि ये किस | प्रकार प्राप्त किए जाते होंगे?

उत्तरः हड़प्पा सभ्यता के लोगों की शिल्प तथा उद्योग संबंधी प्रतिभा उच्चकोटि की थी। मिट्टी और धातु के बर्तन बनाना, मूर्तियाँ, औजार एवं हथियार बनाना, सूत एवं ऊन की कताई, बुनाई एवं टंगाई, आभूषण बनाना, मनके बनाना, लकड़ी का सामान विशेष रूप से कृषि संबंधी उपकरण, बैलगाड़ी तथा नौकाएँ बनाना आदि उनके महत्त्वपूर्ण व्यवसाय थे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, धौलावीरा, नागेश्वर बालाकोट आदि शिल्प उत्पादन के महत्त्वपूर्ण केंद्र थे। चन्हूँदड़ो की छोटीसी बस्ती (7 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तृत) लगभग पूरी तरह शिल्प उत्पादन में लगी हुई थी ।

शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चा माल-

विभिन्न प्रकार के शिल्प उत्पादनों के लिए अनेक प्रकार के कच्चे माल की आवश्यकता थी। उदाहरण के लिए, चिकनी मिट्टी, पकी मिट्टी, ताँबा, टिन, काँसा, सोना, चाँदी, शंख, सीपियाँ, कौड़ियाँ, विभिन्न प्रकार के पत्थर; जैसे- अकीक, नीलम, स्फटिक, क्वार्ज, सेलखड़ी आदि, मिट्टी के बर्तन, सुड़याँ, फयान्स, तकलियाँ मनके, सुगंधित पदार्थ, कपास, सूत, ऊन, विभिन्न प्रकार की लकड़ियाँ, हड्डियाँ, घिसाई, पालिश और छेद करने के औजार आदि विभिन्न शिल्प उत्पादनों के लिए आवश्यक थे।

कच्चा माल प्राप्त करने के स्रोत-

विभिन्न शिल्प उत्पादों के लिए आवश्यक कच्चा माल अनेक उपायों द्वारा प्राप्त किया जाता था। कुछ कच्चा माल स्थानीय स्तर पर उपलब्ध था, किंतु कुछ जलोढ़क मैदान के बाहर से मँगवाना पड़ता था। इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता

के लोग शिल्प उत्पादनों के लिए उपमहाद्वीप और बाहर से कच्चा माल अनेक उपायों द्वारा प्राप्त करते थे।

1. वस्त्र निर्माण के लिए सूत कपास से प्राप्त किया जाता था। कपास की खेती की जाती थी। ऊनी कपड़ों के निर्माण के लिए ऊन भेड़ों से प्राप्त किया जाता था।

2. ईंटों, मिट्टी के बर्तनों, मूर्तियों एवं खिलौनों के लिए चिकनी मिट्टी स्थानीय रूप से उपलब्ध हो जाती थी। चोलीस्तान (पाकिस्तान) और बनावली (हरियाणा) से मिलने वाले मिट्टी के हल साक्षी हैं कि वहाँ उत्तम कोटि की चिकनी मिट्टी मिलती थी।

3. हड्डयाँ विभिन्न पशुओं से प्राप्त की जाती थीं। मछलियों की हड्डियाँ मछुआरों से, पक्षियों की हड्डियाँ तथा जंगली पशुओं की हड्डियों शिकारियों से अथवा स्वयं शिकार करके प्राप्त की जाती थीं।

4. लकड़ी के हलों, विभिन्न वस्तुओं, औज़ारों एवं उपकरणों के निर्माण के लिए लकड़ी आस-पास के जंगलों से प्राप्त की | जाती थी । बढ़िया किस्म की लकड़ी मेसोपोटासिया से मँगवाई जाती थी।

5. सुगंधित द्रव्यों को बनाने के लिए फयान्स जैसे मूल्यवान पदार्थ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से प्राप्त किए जाते थे।

6. हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने उन-उन स्थानों में अपनी बस्तियाँ स्थापित कर ली थीं जिनजिन स्थानों से आवश्यक कच्चा माल सरलतापूर्वक उपलब्ध हो सकता था। उदाहरण के लिए, इन्होंने नागेश्वर और बालाकोट में, जहाँ से शंख सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता था, अपनी बस्तियाँ स्थापित की थीं।

7. वे कार्नीलियन मनके गुजरात से, सीसा दक्षिण भारत से और लाजवर्द मणियाँ कश्मीर और अफगानिस्तान से लेते थे।

8. उन्होंने सुदूर अफगानिस्तान में शोर्तुघई में अपनी बस्ती स्थापित की क्योंकि यह स्थान नीले रंग के पत्थर यानी लाजवर्द मणि के सबसे अच्छे स्रोत के निकट था। इसी प्रकार लोथल जो कार्नीलियन (गुजरात में भडौंच), सेलखड़ी (दक्षिणी राजस्थान और उत्तरी गुजरात से) एवं धातु (राजस्थान से) के स्रोतों के निकट स्थित था।

9. सिंधु सभ्यता के लोग कच्चे माल वाले क्षेत्रों में अभियान भेजकर भी वहाँ से कच्चा माल प्राप्त करते थे। इन अभियानों का प्रमुख उद्देश्य स्थानीय लोगों के साथ संपर्क स्थापित करना होता था। वे अभियान भेजकर राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र से ताँबा और दक्षिण भारत से सोना प्राप्त करते थे।

10. हड़प्पाई लोग संभवतः अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर स्थित ओमान से भी ताँबा मँगवाते थे। हड़प्पाई पुरावस्तुओं और ओमानी ताँबे दोनों में निकल के अंशों का मिलना दोनों के साझा उद्भव का परिचायक है। व्यापार संभवतः वस्तु विनिमय के आधार पर किया जाता था। वे बड़ी-बड़ी नावों एवं बैलगाड़ियों पर अपने तैयार माल को पड़ोस के इलाकों में ले जाते थे तथा उनके बदले धातुएँ तथा अन्य आवश्यक सामान ले आते थे। इन क्षेत्रों से जब-तब मिलने वाली हड़प्पाई पुरावस्तुओं से ऐसे संपर्कों का संकेत मिलता है।

प्रश्न 8. चर्चा कीजिए कि पुरातत्वविद किस प्रकार अतीत का पुनर्निर्माण करते हैं?

उत्तरः अतीत का पुनर्निर्माण करना अत्यन्त कठिन कार्य है। पुरातत्वविदों द्वारा यह कार्य करते समय बहुत-सी महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना पड़ता है। वे पुरास्थलों की खुदाई कर विभिन्न वस्तुओं को प्राप्त करते हैं तथा विभिन्न वैज्ञानिकों की सहायता से उनका अन्वेषण, विश्लेषण तथा व्याख्या करके किसी निष्कर्ष पर पहँचते हैं। इस सम्बन्ध में उन्हें अभिलेखों से बहुत सहायता प्राप्त होती है। हालांकि हड़प्पाई अभिलेखों से इस सभ्यता के अतीत के पुनर्निर्माण में

कोई सहायता प्राप्त नहीं होती है क्योंकि उसकी लिपि को अभी तक पढ़ने में सफलता हासिल नहीं हुई है। अतः पुरातत्वविदों ने मृद्भाण्ड, औजार, आभूषण तथा घरेलू उपकरण जैसे भौतिक साक्ष्यों के आधार पर हड़प्पा सभ्यता के अतीत का पुनर्निर्माण करने का प्रयास किया है। उनके द्वारा किए गए प्रयासों को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से समझ सकते हैं-

(1) हड़प्पाई क्षेत्रों से जले हुए अनाज के दानों एवं बीजों की प्राप्ति हुई है जिससे पुरातत्वविदों को हड़प्पा सभ्यता के लोगों के भोजन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। हड़प्पा स्थलों से गेहूँ, जौ, दाल, सफेद चना, तिल, बाजरा, चावल आदि के दाने प्राप्त हुए हैं। इन क्षेत्रों के उत्खनन से भेड़, बकरी, भैंस, सूअर, हिरण, घड़ियाल आदि जानवरों की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि हड़प्पावासी शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते थे।

(2) पुरातत्वविदों को हड़प्पाई सभ्यता के स्थलों से पकी मिट्टी से बनी वृषभ की मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं जिसके आधार पर पुरातत्वविदों का यह मानना है कि हड़प्पाई लोग खेत जोतने के लिए बैलों का उपयोग करते होंगे। कालीबंगा से भी जुते हुए खेत के प्रमाण मिले हैं। इनके अतिरिक्त पुरातत्वविदों को फसलों की कटाई के कार्य में प्रयुक्त होने वाले औजार भी प्राप्त हुए हैं जिससे प्रतीत होता है कि फसलों की कटाई हेतु इन औजारों का प्रयोग किया जाता होगा। हड़प्पाई क्षेत्रों से प्राप्त नहरों, कुओं एवं जलाशयों के अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि इन क्षेत्रों में सिंचाई व्यवस्था भी अपनाई जाती रही होगी।

(3) हड़प्पा सभ्यता के उत्खनन में पुरातत्वविदों को ऊँचे टीले पर दुर्ग तथा निचले भाग में विस्तृत नगर के साक्ष्य मिले हैं जिसके आधार पर पुरातत्वविद अनुमान लगाते हैं कि दुर्ग में उच्च वर्ग तथा निचले भाग में सामान्य जनता निवास करती होगी। वहीं उत्खनन से प्राप्त छोटे तथा बड़े मकान समाज में आर्थिक असमानता की ओर इशारा करते हैं एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल स्नानागार हड़प्पा वासियों के सार्वजनिक अनुष्ठान को दर्शाता है।

(4) हड़प्पा नगरों में पुरातत्वविदों को विस्तृत शवाधान की श्रृंखला मिली है जिनमें विस्तृत मात्रा में गहने, मनके, मृद्भाण्ड तथा दैनिक उपयोग की वस्तुएँ मिली हैं जिनके आधार पर हड़प्पावासियों की पारलौकिक जगत में आस्था प्रकट होती है।

(5) हड़प्पा नगरों की खुदाई में पुरातत्वविदों को बड़ी संख्या में शिल्प आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं जिनके आधार पर उनकी सभ्यता एवं संस्कृति की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ से बड़ी मात्रा में मिले विभिन्न प्रकार के सुन्दर मनकों से पता चलता है कि हड़प्पवासी सौन्दर्य प्रधान वस्तुओं का प्रयोग करते थे। खिलौना गाड़ी अथवा इक्के गाड़ी के आधार पर उनके यातायात का पता चलता है, वहीं विभिन्न जानवरों की अस्थियाँ उनकी पशुओं पर निर्भरता को दर्शाती हैं।

(6) हड़प्पा सभ्यता से विभिन्न प्रकार की धातुओं से बनी वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि हड़प्पा वासियों का धातु शिल्पकर्म न केवल उच्च कोटि का था अपितु वे धातु गलाने की कला भी भली-भाँति जानते थे। धातुओं की प्राप्ति इस बात का भी संकेत करती है कि हड़प्पावासियों का देशी-विदेशी व्यापार उच्च कोटि का था।

(7) हड़प्पा के विभिन्न नगरों से पुरातत्वविदों को अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जिनमें से अधिकांश मूर्तियाँ स्त्री (देवियों) की हैं जिसके आधार पर पुरातत्वविद अनुमान लगाते हैं कि हड़प्पा सभ्यता मातृसत्तात्मक थी। मोहनजोदड़ो से ही पुजारी राजा की मूर्ति प्राप्त हुई है जिसके आधार पर आनुष्ठानिक क्रियाओं की झलक मिलती है।

(8) उत्खनन में पुरातत्वविदों को बड़ी संख्या में मुहरें (मुद्राएँ) मिली हैं जिनके आधार पर देशी-विदेशी व्यापार की स्थिति स्पष्ट होती है। एक मुहर पर आद्य-शिव अथवा पशुपति की आकृति बनी हुई है जिसके आधार पर हमें आदि शैववाद की झलक मिलती है।

उपर्युक्त विवरण स्पष्ट करता है कि उत्खनन से प्राप्त वस्तुएँ पुरातत्वविदों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती हैं तथा इन्हीं के आधार पर पुरातत्वविद अतीत का पुनर्निर्माण करते हैं।

प्रश्न 9. हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा किए जाने वाले संभावित कार्यों की चर्चा कीजिए।

उत्तरः हडप्पा सभ्यता के राजनैतिक संगठन के विषय में निश्चयपूर्वक कुछ भी कहना कठिन है। हमें ज्ञात नहीं है कि हड़प्पा के शासक कौन थे; संभव है वे राजा रहे हों या पुरोहित अथवा व्यापारी । कांस्यकालीन सभ्यताओं में आर्थिक, धार्मिक एवं प्रशासनिक इकाइयों में कोई स्पष्ट भेद नहीं था। एक ही व्यक्ति प्रधान पुरोहित भी हो सकता था, राजा भी हो सकता था और धनी व्यापरी भी। हंटर महोदय यहाँ के शासन को जनतंत्रात्मक शासन मानते हैं किंतु, पिग्गाट और व्हीलर के मतानुसार सुमेर एवं अक्कड़ के समान हड़प्पा में भी पुरोहित राजा शासन करते थे। कुछ विद्वानों के अनुसार हड़प्पा साम्राज्य पर दो राजधानियों-हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से शासन किया जाता था।

कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार संभवत: संपूर्ण क्षेत्र अनेक राज्यों, रजवाड़ों में विभक्त था और उनमें से प्रत्येक की एक अलग राजधानी थी; जैसे-सिंधु में मोहनजोदड़ो, पंजाब में हड़प्पा, राजस्थान में कालीबंगन और गुजरात में लोथल। कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार हड़प्पा सभ्यता में अनेक राज्यों का अस्तित्व नहीं था अपितु यह एक राजा के नेतृत्व में एक ही राज्य था। हड़प्पा सभ्यता के शासन का स्वरूप चाहे जो भी हो, इतना तो निश्चित है कि प्रशासन अत्यधिक कुशल एवं उत्तरदायी था। हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों को किया जाता होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि शासक राज्य में शांति व्यवस्था को बनाए रखने तथा आक्रमणकारियों से अपने राज्य की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी होता था। हड़प्पा सभ्यता के सुनियोजित नगर, सफाई तथा जल निकास की उत्तम व्यवस्था, अच्छी सड़कें, उन्नत व्यापार, माप-तौल के एकरूप

मानक, सांस्कृतिक विकास, विकसित उद्योग-धंधे, संपन्नता आदि सभी इस तथ्य के प्रबल प्रमाण हैं कि हड़प्पा के शासक प्रशासनिक कार्यों में विशेष रूचि लेते थे। संभवतः हड़प्पा के शहरों की योजना में भी राज्य का महत्त्वपूर्ण भाग रहा होगा।

इतिहासकारों का विचार है कि प्राचीन विश्व में जहाँ-जहाँ नियोजित वस्तुओं के प्रमाण मिलते हैं वहाँ-वहाँ इस बात का पता चलती है कि सड़कों की योजना का विकास धीरे-धीरे नहीं हुआ अपितु एक विशेष ऐतिहासिक समय में इसका निर्माण हुआ और अनेक विषयों में बस्ती को फिर से बसाने के कारण ऐसा किया गया। इतिहासकारों का विचार है कि हड़प्पा के शहरों की ईंटों का एक जैसा आकार या तो 'कड़े प्रशासनिक नियंत्रण के कारण था या इसलिए कि लोगों को व्यापक पैमाने पर ईंट बनाने के लिए नियुक्त किया गया होगा। इसी प्रकार, |

हड़प्पा के विभिन्न स्थानों पर एक ही प्रकार के ताँबे, काँसे और मिट्टी के बर्तन मिलने से भी यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है। इसी प्रकार यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि विभिन्न नगरों की योजना भी राज्य द्वारा बनाई गई होगी और विभिन्न स्थलों पर सड़कों और नालियों के निर्माण का कार्य भी राज्य ने किया होगा। उल्लेखनीय है कि हड़प्पा के शहरी केंद्रों की योजना का अध्ययन करने पर वहाँ की नागरिक व्यवस्थाओं की देख-रेख और एक विशाल जल और निकास व्यवस्था का पता चलता है। निकास के लिए प्रत्येक गली में नाली बनी होती थी।

गली में बनी यह नाली पूरे शहर नियोजन का एक भाग थी। घर अपने-अपने ढंग से अलगअलग इस कार्य को नहीं कर सकते थे। इसका स्पष्ट तात्पर्य है कि प्रशासन द्वारा स्वयं सभी कार्यों को नियंत्रित किया जाता था तथा इनकी देख-रेख का कार्य किया जाता था। ऐसा लगता है कि शिल्प उत्पादन और वितरण का कार्य भी शासकों द्वारा नियंत्रित होता था; यही कारण था कि कुछ

उद्योग विशेष रूप से कम वजन वाले कच्चे माल अथवा ईंधन के स्रोत के निकट स्थित होते थे और कुछ वहाँ स्थित थे जहाँ उनकी खपत सबसे अधिक थी। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे नगरों में विशाल अन्नागारों का मिलना इसका प्रबल प्रमाण है कि हड़प्पाई शासकों को सदैव प्रजाहित की चिंता रहती थी, इसीलिए अनाजे को विशाल अन्नागारों में सुरक्षित रख लिया जाता था ताकि किसी भावी आपात स्थिति में उसका प्रयोग किया जा सके।